In Loving Memory of

Shri Parmeshwar Prasad Narain Singh

Founder St. Paul Schools and College

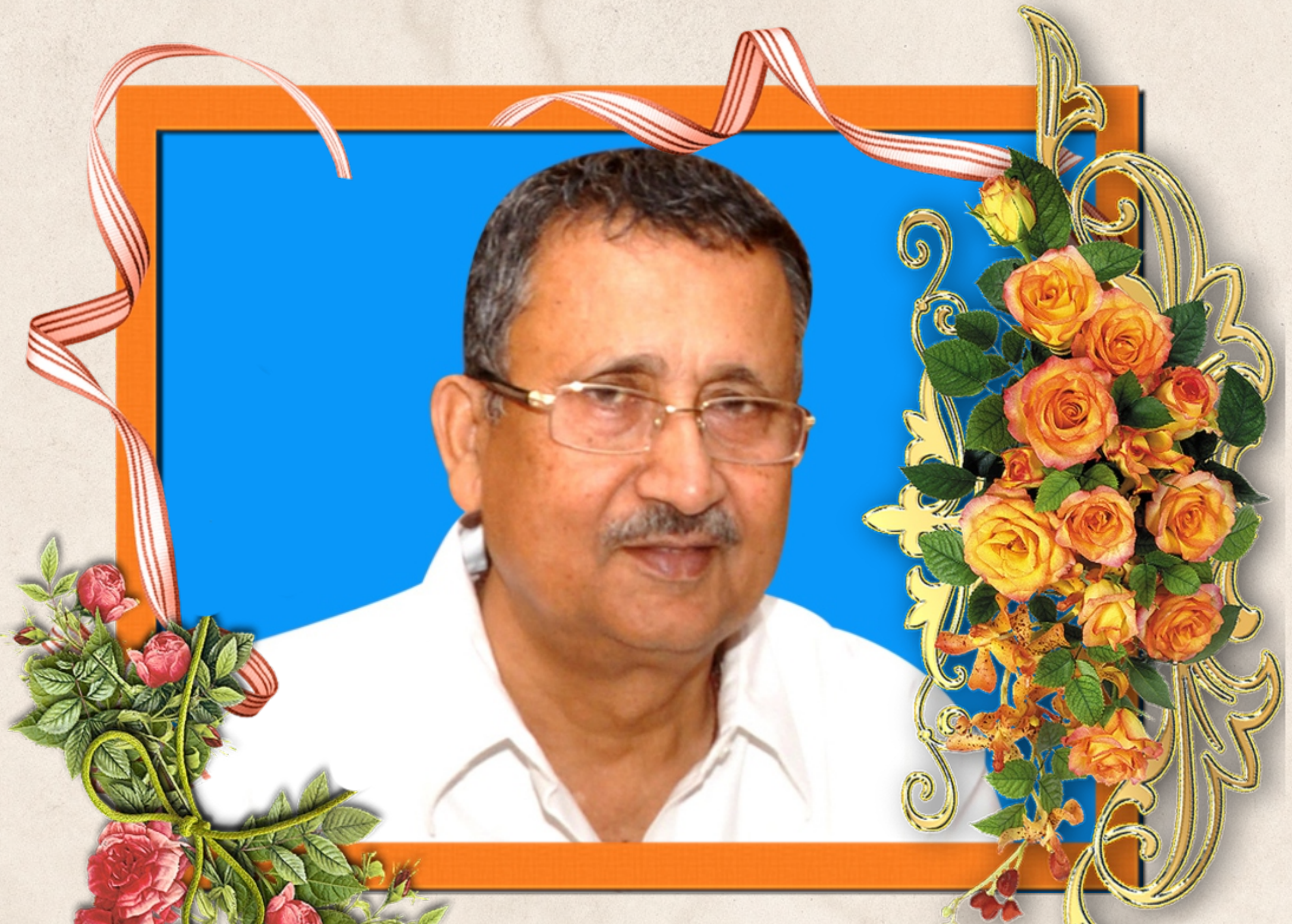

9th January1946 – 23rd May2021

We miss you dearly
May the sun shine on you wherever you be
May you be our guiding light forever and ever to be!

ST. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

At- Jhahuri, P.O- Birsinghpur, Tehsil (Block) - Kalyanpur,
Samastipur Bihar, Pin - 848102,
Phone : 9709871006, 9905510604, 8252105160
E-mail : spttcbirsinghpur@gmail.com, Website: www.spttcbir.org

अपराजिता

Volume - 02 Year - 2021

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR

Samastipur (Bihar)

संपादक मंडल

मुझे बहुत ही गर्व का अनुभव हो रहा है यह बताते हुए कि पुनः महाविद्यालय परिवार महाविद्यालय पत्रिका ''अपराजिता'' का अंक–2 प्रकाशन कर रहा हैं। महाविद्यालय पिछले 8 वर्षो से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा हैं। यह प्रत्रिका उसी दिशा में एक उत्कृष्ट प्रयास है।

इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करने का एक अवसर देने का प्रयास किया गया हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारे महाविद्यालय के सचिव श्री अविनाश कुमार की महती भूमिका हैं। उनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था इसके साथ ही महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 रोली द्विवेदी ने भी अपना पूरा सहयोग पत्रिका के प्रकाशन में दिया हैं। हम उनका आभार व्यक्त करते हैं। पत्रिका के प्रकाशन में सभी प्राध्यापक और महाविद्यालय परिवार ने भी अपना पुरा सहयोग दिया हैं। मैं उन सबका भी आभार व्यक्त करता हूं।

प्रस्तुत पत्रिका के इस अंक में कविता, कहानी, वैचारिक, लेख जैसी विविध कियाऐं हैं, जो सभी शिक्षकों, प्रशिक्षुओं की रचनात्मकता चिंतनशीलता एवं अन्वेषण की अभिव्यक्ति हैं।

अंत में मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा जिन–उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इसका प्रकाशन किया गया हैं, उसके सफल होने की ईश्वर से कामना करता हूं।

एस.एम.तहसीन आलम कादरी
सहायक प्राध्यापक

अर्पणा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

सुरभि श्रुति
प्रशिक्षु बी.एड.
2019–21

पल्लवी कुमारी
प्रशिक्षु डी.एल.एड.
2019–21

Paper Clippings

Avinash Kumar
Secretary

Message from Secretary

It gives me eminence pleasure to know that our annual college magazine Aparajita -2 is getting published soon.

Last one and half has been tough for all of us .

But there is no time to be exhausted : with pandemic still raging , I would like to say thanks to each and every staff members for ensuring minimum damage to our academic activities.

My sincere thanks to entire editorial team of Aparajita for commendable efforts put forth by them.

I hope that the Magazine will showcase some of the best creative endeavors of student and faculty and enhance innovative versatile thinking.

Thank You

वाकिफ कहाँ जमाना हमारी उड़ान से।
वो और थे जो हार गए आसमान से।।

डॉ. रोली द्विवेदी
प्राचार्या

अभी हाल में ही हम सभी ने एक बड़ी समस्या का सामना किया, यह समस्या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की थी इसने सम्पूर्ण विश्व को झकझोर कर रख दिया। जिसमें हमने प्रत्येक क्षेत्र से अपनी अनेक महान विभूतियों को खोया, चाहे चिकित्सा हो या अन्य कोई भी क्षेत्र हो इस महामारी से अछूता नहीं रहा।

कोरोना काल ने सबको अपने और अपने आसपास के वातावरण के विषय में सोचने और समझने का अवसर दिया। लम्बे लॉकडाउन में हर किसी को अपनी–अपनी मुश्किले रही। इस समय शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही अपना समय घर पर बिता रहे थे। शिक्षार्थियों के जीवन जीने के तरीके में बहुत बदलाव आया। घर में ही रहकर पढ़ाई करना, इस काल में शिक्षार्थियों में अच्छा परिवर्तन भी देखने को मिला है। जैसे आनलॉइन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर अपने अन्दर छिपी हुई कला और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना, घर में सभी के साथ सामंजस्य पूर्वक समय बिताकर पढ़ाई के अलावा आनलाईन वाद–विवाद, बेविनार आदि में भाग लेना।

इस COVID-19 के समय में भी हमारे महाविद्यालय ने बिहार में सबसे पहले शिक्षार्थियों की पठन–पाठन की समस्या को देखते हुए आनलाईन कक्षाएँ संचालित की। शिक्षार्थियों से जुड़े रहकर उनकी सभी शैक्षिक समस्याओं का समाधान हमारे विद्वान शिक्षकों द्वारा किया गया, इस दौरान हमने चार विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की बेविनार एवं वर्कशॉप का आयोजन किया। शिक्षार्थियों के सहयोग से हम अपनी रणनीति में सफल भी हुए हमारे महाविद्यालय में बी.एड. और डी.एल.एड. का परीक्षा परिणाम प्रतिवर्ष की भॉति इस वर्ष भी 100 प्रतिशत रहा।

हम शिक्षार्थियों में कौशल विकास करते है। हम अपने शिक्षार्थियों को अपनी क्षमता की पहचान करने में सहयोग करते हैं और निरंतर प्रयास, धैर्य और ध्यान के माध्यम से लक्ष्य की ओर मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम शिक्षार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते है। हमारे महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि हासिल करवाने पर नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों की समाज उपयोगी एवं सामर्थ्य को समझने, परोपकार की ज्योति जलाने, राष्ट्रीयता का विकास करने का हैं।

हम आशा ही नहीं करते पूर्ण विश्वास हैं कि एक दिन हमारे शिक्षार्थी, हमारे महाविद्यालय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराएगें। हमारा प्रयास हैं कि सभी शिक्षार्थी अच्छें सवप्न देखें और उन्हे पूरा करने के लिए सतत प्रयास करें।

धन्यवाद

शैली आपके दृष्टिकोण और आपके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है।

डॉ० ए० पी० सिंह
विभागाध्यक्ष
डी०एल०एड०

''अपराजिता – 2'' संत पॉल महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षको की अनुभूतिपरक साहित्यिक अभिव्यक्ति का नूतन प्रयास है। वस्तुतः महाविद्यालय तक आते – आते विद्यार्थियों का मानसिकता स्कूली शिक्षा से महाविद्यालयी शिक्षा के रूप – रेखा, नियमो एवं क्रियाकलापों को समझने एवं समायोजन करते हुए विभिन्न पहलूओं से अवगत हो जाते है। अब विद्यार्थियों की संवेदनाएं भी सामाजिक – स्थिति, शिक्षा, रोजगार, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं भविष्य के विकास को लेकर जागृत होने लगती है।

ये सवेंदनाए विद्यार्थियों के मनोभाव में विविधि विचारो के रूप में प्रस्फुटित होने लगती है। विद्यार्थियों में अपने परिवेश को देखने का अपना एक नजरिया होता है जिसे वे अपने कहानी, कविता, आलेख के रूप में इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त करते है। यह विद्यार्थियों के विचारो के नव–रूप, जागरूकता रूपी अनगढ़ता, सुगढ़ता और परिपक्क्ता के विभिन्न रूप को प्रस्तुत करता है। धन्यवाद

हम विद्यार्थियों के मनोभावों एवं व्यक्तिगत–भिन्नता रूपी रूचि, जिज्ञासा, ज्ञान, अनुभव के आधार पर दक्षता को विकसित करके व्यक्तित्व को निखारते है, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण हेतु एवं भविष्य के चुनौतियों के लिए सज्ज करते है।

धन्यवाद

प्रो0 मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक

अलग होती हैं गुरूत्वीय तरंगे।

पूरे ब्रह्मांड में मौजूद विधुत– चुंबकीय (इलेक्ट्रोमैंग्नेटिक) तरंगों के मुकाबले गुरूत्वीय तरंगें अंतरिक्ष में अलग ढ़ंग से विचरण करती है। इनके विषय में पहले से माना जाता था कि ब्लैक होल, न्यूट्रॉन तारों आदि से फूटी ये तरंगें पृथ्वी तक आती हैं और इनसे उनके (ब्लैक होल आदि के) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती हैं। इन तरंगों की खास बात यह है कि प्रकाश, अल्ट्रावॉयलेट, एक्सरे और रेडियो किरणों (तरंगों) के मुकाबले कमजोर होने के बावजूद ये अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चीज में प्रवेश कर जाती हैं। इस वजह से अरबों प्रकाशवर्ष दूरी से आने पर भी इनमें छिपे बह्यांड के रहस्यों के संकेत नष्ट नहीं होते। इसके विपरीत अन्य सभी किरणें धूल व गैस आदि में प्रवेश करने पर धूमिल या कमजोर पड़ जाती हैं। हालांकि समस्या यह भी थी कि इन्हें पृथ्वी पर मौजूद ऑप्टिकल टेलीस्कोप और रेडियो टेलीस्कोप से नहीं पकड़ा जा सकता था, पर अब लाइगो से इस समस्या का हल मिल गया। लाइगो के जरिये ब्रह्मांड की गतिविधियों को पढ़ने–समझने का एक नया जरिया मिल गया है, जिससे खगोलविदों का खगोल विज्ञान की वे जानकारियां मिल सकेंगी, जिन्हें अब तक समझा नहीं जा सकता था।

नोटः–लिगो (लाइगों) (Ligo) भौतिक का एक विशाल प्रयोग है जिसका उद्देश्य गुरूत्वीय तरंगों का सीधे पता लगाना है।

साइबर साईकोलौजी : 21वी सदी की मांग

अर्पणा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

सामान्य रूप से मानव के व्यवहार एवं मन/मस्तिष्क का अध्ययन ही मनोविज्ञान कहलाता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं, आकांक्षाओ, मानसिक – विकारो के निदान आदि का अध्ययन का निहितार्थ है। जब बात आज के परिवेश में हो तो, डिजिटल दुनिया या सूचना संचार प्रौधोगिकी के युग में, मानव अपने विकास के क्रम में डिजिटल तकनीकी के उपयोग एवं इनके क्रियाकलापों से स्वयं को अलग नही कर सकता है। आज हम लोग अपनी सभी गतिविधियों एवं जीवनशैली को सुचारू एवं सम्यक रूप से चलाने हेतु, सभी प्रकार के सेवाओ के आदान–प्रदान हेतु, किसी – न – किसी रूप से बहुतायत इन डिजिटल तकनीकीयो का उपयोग करते है। जब डिजिटल तकनीकी के द्वारा मानवो के व्यवहार के परस्पर सम्बंध एवं तकनीकी के प्रयोग से हुए व्यवहार में परिवर्तन और प्रभाव के मध्य परस्पर अध्ययन को **साइबर साईकोलोजी** कहते है।

साइबर साईकोलोजी एक नई डिसिप्लिन है जिसमे साइबर तंत्र एवं डिजिटलनेटिव के मध्य व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत इंटरनेट एडिक्शन (पोर्नोग्राफी, पब्जी, गेमिंग, सोशल साईट की लत) डार्क–नेट, काग्निटिव विज्ञान, आर्टिफिसियल इन्टेलिजेंसी इत्यादि का अध्ययन की जाती है। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी की आज हम सभी सूक्ष्म या बृहत् रूप में डिजिटल तकनीकी से जुड़े हुए है, मानव किस प्रकार से डिजिटल तकनीकी के सेवाए, क्रियाकलापों में लिप्त हो रहे है जिनका उनके वास्तविक जीवन में गंभीर प्रभाव देखने को मिलता है। बालक गेमिंग के लत में, नवयुवक सोशल साईट में व्यस्त तो व्यस्क आर्टिफिसियल इन्टेलिजेंसी के अंतर्गत सिमुलेशन आधारित क्रियाकलापों की संलिप्तता त्वरित हो रही है।

अतः जिस प्रकार नये–नये गेम एडिक्शन, नेट सरफिंग की प्रवृति एवं डिजिटल तकनीकी में संलिप्तता में विकास हो रहा है की आने वाले भविष्य में गंभीर समस्याए एवं चुनौतियों का सामना बृहत रूप से करना होगा। इन समस्यायों के उचित समाधान एवं निर्देशन हेतु पूर्व नियोजित एक नई दृष्टिकोण के साथ – साथ साइबर साईकोलोजी का ज्ञान और समझ होना आवश्यक है। जिससे हम स्वयं को एवं भविष्यगत समस्याओं को दिशा निर्देशित कर तकनीकी के होने वाले कुपरिणामो से सुरक्षित हो सकेंगे।

मिथिलश कुमार
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा का उद्देश्य: जन मानस का विकास

जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया शिक्षा अपने वास्तविक अर्थ में सिखना से जुड़ी है। शिक्षा मनुष्य द्वारा अपने आंतरिक और वाह्य परिवेश के साथ समायोजित होने की कला है। शिक्षा जीवन का वह आईना है जिसमें मनुष्य अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को प्रतिबिम्ब के रूप मे देखता है। ये प्रतिबिम्ब ही संसाधन बनकर मानव व्यक्तित्व के विकास का मार्गप्रस्तुत करते है। डॉ. एस. राधाकृष्णन ने शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था कि शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नही है। न यह विचारो की सवंर्द्धन स्थली है और ना ही नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा है, सत्य को खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण है। इस प्रकार शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। सही और गलत के मध्य फैसला करने का माध्यम है। निश्चित तौर पर शिक्षा जीवन के पुराने प्रतिमानो को समय की नई मांगों के अनुकूल बनाने का सामंजस्य बैठाने के रूप में देखा जा सकता है। समाज मे व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों को शिक्षा के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। वही समाज में नवचेतना का संचार विकास के मानवीय मूल्यों का स्थापित किया जा सकता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में प्राथमिक शिक्षा विकास के उद्देश्यों में उस मां के समान है जो उंगुली पकड़ कर बच्चे को न केवल चलाना सिखाती है बल्कि प्रथम बार में उसमें आत्मविश्वास को रोपित करती है। गांधी जी ने शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के गुणों का सर्वांगीण विकास करना है।'' इन सभी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए तथा शिक्षा को अनिवार्य रूप से सुलभ और निःशुल्क बनाने के लिए संवैधानिक प्रावधानों में स्थान दिया गया। राज्य की नीति निदेशक तत्वों की धारा 45 में राज्य को निर्देशित किया गया। की 6–14 की वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य बनाने का दायित्व राज्य का होगा। स्वतंत्रता के छः दशक पश्चात् जब प्राथमिक शिक्षा अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकी तब 86वें संवैधानिक संशोधन 2002 द्वारा 6–14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चो को शिक्षा का मौलिक अधिकार प्रदान करते हुए संविधान में एक नया अनुच्छेद 21 (ए) जोड़ा गया। प्राथमिक शिक्षा की दिशा में अगर सब कुछ ठीक रहा और समाज तथा राज्य ने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए इसके लिए प्रयास किए तो वह दिन दूर नही जब देश का प्रत्येक बच्चा कागज, कलम और दवात से जुड़ पाएगा और शिक्षा में मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन आ पाएगा।

स्वयं का आत्मचिंतन

शिप्रा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

अपने सिर पर टीम की सफलता का श्रेय लेना किसे नही आता? कुछ लोग इसी ताक में रहते है की कार्य दुसरे लोग करे और श्रेय सभी कुछ का उन्हें मिलता रहे, व्यक्ति चाहे किसी भी बड़े से बड़े पद को क्यों न सुशोभित करे। यह स्थिति सभी क्षेत्रो में है चाहे शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, उद्योग या अनुसन्धान हो। सभी क्षेत्रो में जब भी समूह कार्य होता है, तो समूह का अधिकारी या सदस्य कार्य के सफलता का श्रेय स्वयं लेता है लेकिन उस व्यक्ति का वास्तविक कद बौना ही कहा जायेगा। अर्थात जब व्यक्ति किसी दुसरे के कार्य के द्वारा अपना नाम पर्दर्शित करना चाहता है, लेकिन स्वयं के कार्यो का आत्मचिंतन नही करता । बहुत कम ही ऐसे व्यक्ति है जो टीम के त्रुटियों को भी अपनी त्रुटि के रूप में स्वीकारते है, वह व्यक्ति वास्तव में टीम के महान नेता के रूप में जाना जाता है।

11 अगस्त 1979 की यह घटना है, जब **एस० एल० वी० –3** की असफलता की समीक्षा के लिए 70 से भी अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे थे। सभी व्यक्ति ने अपने – अपने विचार व्यक्त किये जिसके परिणामस्वरूप **नाइट्रिक एसिड के रिसाव** को उत्तरदायी मानते थे। सभी व्यक्तियों का कहना था कि असफलता से बचने के सभी आवश्यक कदम उठा लिए गये थे। प्रो० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम इन कारणों से संतुष्ट नही थे। वे खड़े हुए और प्रो० धवन को लक्ष्य करके कहा, महोदय, यधपि इसकी असफलता के लिए साथियों ने तकनीकी गड़बड़ी को दोषी ठहराया है तो भी अंतिम चरण के उल्टी गिनती के दौरान नाइट्रिक एसिड रिसाव को अनदेखा करने की जिम्मेदारी मै अपने ऊपर लेता हूँ क्योंकि एक मिशन डायरेक्टर के रूप में मुझे प्रेक्षण रोक देना चाहिए था और संभव था उसको सुरक्षित बचा लेने का प्रयत्न करना। अन्य जगहों में ऐसी स्थिति में मिशन डायरेक्टर को अपने पद से हाथ धोना पड़ जाता है। इसीलिए **एस० एल० वी० – 3** की असफलता की सम्पूर्ण जिम्मेदारी मै अपने ऊपर लेता हूँ।

कुछ समय के लिए पुरे हॉल में सन्नाटा छा गया। प्रो० धवन खड़े हुए और बैठक ख़त्म करने का संकेत देकर बाहर चले गये। अतः बहुत की कम व्यक्ति होते है जो स्वयं आत्म – चिंतन करके सम्पूर्ण टीम के कार्यो के असफलता या मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते है।

आदित्य प्रकाश
सहायक प्राध्यापक

विज्ञान और अध्यात्म

विज्ञान ने बहुत उन्नति की है, इसी कारण संसार सिमट कर छोटा हो गया है, लेकिन विज्ञान ने हमारे शरीर को तृप्त किया है। हमारे मन और आत्मा की भूख को आज तक तृप्त नही कर सका इसका कारण यह है, कि भौतिक मूल्यो का संबंध अध्यात्म और आत्मशिक्षा से है। विज्ञान ने भौतिक साधन विकसित किए है, और इसी के चलते कई लोग ईश्वर को भी नहीं मानते।

आत्मशिक्षा प्राप्त व्यक्ति भौतिक मूल्यों की तरफ आकर्षित नही होता, वह जिंदगी को जीता है, भावनाओ को महत्व देता है, चिंतन करता है, इसलिए उसकी जिदंगी औरो से श्रेष्ठ है। रूहानियत हमें जीने की कला सिखाती है। जबकि विज्ञान संसार को भोगने को उकसाता है, विज्ञान हमें रूहानियत की ताकत नही दे सकता, भौतिक वस्तुए क्षणिक आनंद देती है। अपार, आनंद की प्राप्ति तो आत्मशिक्षा द्वारा ही संभव है। गहराई से विचार करे, तो विज्ञान का कद रूहानियत से काफी छोटा पाएगे।

विज्ञान ने दो मनुष्यों के बीच दूरियाँ बढ़ाई है, और रूहानियत दो दिलो को पास लाने का काम करती है, उसके उसूल पूरी तरह मानवता पर अधारित है, ऐसा क्यों है? कि जैसे – जैसे विज्ञान की उन्नति हुई है, प्रेम जैसे इश्वरीय गुण हमसे निरंतर दूर होता गया है। ज्यों–ज्यों वैज्ञानिक उपकरण बढ़ते जा रहे है, शांति प्रिय लोगो के दिलो में तीसरे विश्वयुद्ध का खौफ भी बढ़ता जा रहा है।

विज्ञान बहुत आगे बढ़ चूका है, लेकिन इसने हमसे सूख, चैन, प्रेम और शांति को दूर कर दिया है। पहले जमाने में अनेक असुविधाएँ थी मगर वे आज के सुविधाओ से कही अच्छी थी, आज आदमी थोड़ी ही देर में कही से कही पहुच जाता है। लेकिन शायद एक दूसरे के दिल के पास नही पहुँच पाता। उसे केवल अपनी चिन्ता होती है वह दूसरो के आन्तरिक सुख–दु:ख में शामिल नही हो पाता। यह स्थिति विज्ञान की ही देन है। विज्ञान ने समानता को ताक पर रख दिया है। इंसान ने कभी आकाश में उड़ने का ख्वाब देखा था, विज्ञान ने उसके सपने को साकार कर दिया लेकिन यह किसी परिंदे की उन्मूक्त उड़ान नही है, भौतिक वस्तुओ की तुलना प्राकृतिक वस्तुआ से नही की जा सकती । मनुष्य द्वारा निर्मित चीजो में क्या पेड़–पौधो और जानवरो जैसा प्राकृतिक गुण है? जिस अपार आनंद कि प्राप्ति हमें प्राकृतिक हवा में होती है? वह क्या बिजली के पंखे की हवा में भी होती है?

दोनो सुखो को एक समान समझने का मतलब है, कि हमने उसकी सून्दरता को पहचाना ही नही, वास्तविक सुख, भौतिक मूल्य और भौतिक पदार्थ दे ही नहीं सकते। यदि हमारा मन और आत्मा दोनो संतुष्ट है, तभी हम सुखी हो सकते है। विज्ञान ने आत्मिक सुख अभी तक नही दिया है, और न भविष्य मे दे सकेगा, क्योंकि मन व आत्मा के संतुष्ट करने का खजाना तो प्रकृति के विराट प्रांगण में ही विद्यमान है।

Reecha Sinha
Assistant professor

HAPPINESS AND COMPONENTS OF HAPPINESS

Life satisfaction, usually referred to as "happiness, " comes from the fulfillment of a need or wish and as such, is the cause or means of enjoyment. As Alston and Dudley have explained, "Life Satisfaction is the ability to enjoy one's experience, accompanied by a degree of excitement ".

According to the definitions of happiness given in any standard dictionary, it is a state of well being and contentment - a pleasurable satisfaction that comes when the individual's needs and wishes are fulfilled. Happiness is a synonym for Life Satisfaction. Information about Happiness and Unhappiness or Life Satisfaction and dissatisfaction are subjective states come from introspection or from answer to questionnaires. This is because only the person involved can say whether they are happy or unhappy or whether they are satisfied or dissatisfied with their lives.

At every period in the life span, happiness is influenced by a number of factors. The most common factors of happiness are Health, Physical Attractiveness, Degree of Autonomy, Interactional Opportunities outside the family, Type of work, Work status, Living conditions, Material possessions, Balance between expectations, Emotional Adjustment, Attitude toward an age period, Realism of self concept, Realism of Role Concepts.

Meltzer and Ludwig reported that happiness at different periods in the adult years was remembered as being due to family, marriage, good health, and achievements, while Unhappiness was associated with illness, physical injuries, death of a loved one, unsuccessful work experiences, and failure to reach goals.

Nand Kishor kumar
ICT Lab Assistant

IOT in Education

Today the objects around us are becoming smarter due to the innovation in Technology. 21st century the time of ICT revaluation where IT and CT both are affected the lifestyle and culture of human being. People have adopted this technology and innovation due to the fast and quick controlling of work. Due to fast innovation in computer technology every sector is going to adopt **Automation**. Our development is going to a smart culture where home automation, industrial automation will take place.

Education sector has not been in the forefront of adopting latest technologies. The Internet of thing (IOT) the new technological paradigm is conquering the entire world by connecting various objects around us. **"The internet of thing (IOT) is basically a network of several devices which are attached with miscellaneous software, electronics and network connectively of distinct orientation, aimed at exchanging and compiling of any kind of information."**

It is applied in many industries including finance, travel, teaching, and telecommunication and so on. When **IOT** will adopted by education sector it will enhance the education system to provide advance values to the structure and environment.

- **A smarter school will promote personalized learning.**
- **The smart device used in the campus utilize Wi-Fi network for receiving instruction and sending data.**
- **It helps to keep track of major resources for college and school as create smarter lesson plan, design secure campuses, enhance information access and much more.**
- **It provides better understanding and interaction to the student in gaining knowledge on new thing.**
- **It makes easy learning process where textbooks are joined to web-based sites and set video, materials, animation, assessment and other materials.**
- **Various tools, app which provides 3D graphics textbook, video and capability to take notes easily.**
- **It adds an immense value in terms of enhancing the security of school and college.**

Education

Education is the key that unlocks the way of our life , In other hand we can say that education is the mode of conduct that shows the path of success in our life . We should never compare education to our degree because degree is a piece of paper . Having education in an area helps people to think , feel and behave in a way which contributes to their success and improves not only their personal satisfaction but also for their community . In addition , education develops human personality, thought process prepare people for life experiences. Education Impowers mind which will be able to conceive good thoughts and ideas. Education is only one thing that can remove Corruption , unemployment and environmental issues . Education is not only getting a degree it is about how we can use our conventional knowledge in practical life to resolve or face daily life challenges . A good education makes an individual developed individually, socially as well as economically. Education helps us to grow our daily life activities in the best possible ways. According to Nelson Mandela "Education is the most powerful weapon which you can use to change the world".

Although, Education gives a systematic way to survive and an unique technique which is helpful to adjust in community and make integration for our nation .

Ratnesh Kumar
B.Ed. 2020-22

Topic: Needs of Physical Education In Modern Society

Most of the people do not know the value of physical education, mostly they are confused by the term physical Education, what physical education is?, some people think that there are exercises in physical education. A common man considers that physical education is meant only for refreshment and entertainment. Some considers this as a physical culture to shape the body etc. so that we have not appreciated physical education in school curriculum. Physical education needed to be established as a subject in the mainstream courses of education system, the governing and executive body for monitoring the curriculum of the courses must recognize it up to a level where the students/practitioners can get certain opportunities to insure job through physical education.

In many school and colleges there is no availability of physical education infrastructure like there a lack of proper ground and equipments. Physical education programme guides us to keep ourselves fit and healthy. Without the knowledge of physical education, an individual cannot live a happy and healthy life. Therefore it is very essential that physical education should be taught as a compulsory subject in all schools and colleges.

Swami Vivekanand has stated that "What India need today is not the Bhagwat Geeta but the Football Grounds.

Amarnath Kumar
B.Ed. 2020-22

Covid-19 और लड़खड़ाती शिक्षा का सहारा तकनीकी

कहीं फायदे तकनीक से लाखों, तो कहीं अनगिनत नुकसान हुए।
तकनीक के कारण ही आज, मुश्किल से मुश्किल कार्य आसान हुए।।

वर्तमान परिदृश्य मे शिक्षा का वास्तविक अर्थ हैं मानवता के निर्माण के साथ–साथ अर्थोपार्जन हेतु सक्षम बनाना। शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो विद्यालयों वातावरण के साथ–साथ प्रकृति से अंतः क्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता हैं। शिक्षा के सततः एवं समग्रता व सुलभता हेतु औपचारिक माध्यम के अतिरिक्त अनौपचारिक माध्यमों की भी अहम भूमिका है। विगत महीनों मे Covid-19 महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था संपूर्ण रूप से प्रभावित हुआ जिस कारण छात्र एवं शिक्षक शौक्षिक क्रिया–कलापो को जीवन्त रखने हेतु तकनीकी पर आश्रित हुऐ।

तकनीकी ही वह माध्यम बनकर इच्छा एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं को प्लेटर्फाम प्रदान करते हुए शिक्षण व्यवस्था को जीवन्तः बनाऐ रखा एवं शिक्षण प्रक्रियाओं के सभी कार्य शिक्षण समाग्री के निर्माण से लेकर छात्रों के मुल्यांकन तक अलग–अलग Software के माध्यम से किया जाने लगा। शिक्षण अधिगम समाग्री के निर्माण हेतु Word Processed Software, Light के निर्माण हेतु Presentation software विषय वस्तु संप्रेषण के लिए Online Live Conferencing software Google Meet, Zoom, Zipsi, Microsoft Team, Google Hangout, Classroom के रूप में Google Evaluation हेतु Google Docs जैसे Software का उपयोग किया जाने लगा।

वर्तमान वैश्विक महामारी के द्वारा शिक्षण व्यवस्था पर प्रभावित संकट को देखते हुये शिक्षण अधिगम के लिए तकनीकी का ज्ञान अनुप्रयोग का कौशल, शिक्षण प्रक्रियाओं में समायोजन की कुशलता शिक्षकों के लिए भविष्य की शैक्षिक आपदाओं मे एक सफल स़क्षम व कारगर सहयोग के रूप में विषयों के साथ–साथ तकनीकी ज्ञान का भी होना जरूरी मालूम पड़ता हैं।

इस तरह तकनीक में कुछ अच्छाइयां और कुछ बुराइयाँ शुमार है।
माना बुराई है इसमें पर यह तकनीक ही देश के विकास का आधार हैं।।

रवि कुमार
डी०एल०एड
2019–21

LONELINESS

The yellow moon
That peeped through my curtains
Told me
It wouldn't wait for me.

The deep red sun
That knocked at my door
This morning
Told me
It wouldn't wait for me.

But grief came
I don't know when
To tell me
I must stay with you for
Your loneliness

Forever+

Surabhi Shruti
B.Ed. 2019-21

St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur, Samastipur
(Under Aegis of Parmeshwar Neeta Education Trust), Recognized by NCTE, Bhubaneshwar
Affiliated to L.N.Mithila University (B.Ed.), Darbhanga & Bihar School Examination Board, Patna (D.El.Ed.)

NATIONAL WEBINAR ON
"Dealing with uncertainty during the Corona virus Pandemic"
30 July 2020 at 11:00 AM to 02:00 PM

Speaker-1 Md. Tanwir Yunus
(Associate Professor University Dept. of Education),
Vinoba Bhave University, Hazaribagh (Jharkhand)

Speaker-2 Md. Sajjad Ahmad
(Asst. Professor Dept. of Education),
Jamia Millia Islamia University, New Delhi

Speaker- 3 Hitesh Kumar Singh
LL.B (CLC Delhi University) IIM (Ahmedabad), ISB (Hyderabad)
Ex legal head (TIML - TOI group, Airtel Service Area, Tata power)
Practicing Supreme Court lawyer

Speaker- 4 Dr. Sachin Kumar
(Asst. Professor Dept. of Education),
Ranchi Women's College, Ranchi University, Ranchi

ADDRESS BY
Dr. Roli Dwivedi
(Principal)
SPTTC Birsinghpur

Dr. Anil Pd. Singh
(HOD, D.El.Ed.)
SPTTC Birsinghpur

Organizing Committee
Mr. Amrendra Kumar
(Asst. Professor)
S M Tahseen Alam
(Asst. Professor)

शिक्षा में कला की भूमिका

''कला'' मानव के आतंरिक अभिव्यक्ति रचनात्मक शक्ति की सौंदर्यात्मक परिणाम है। जिसमें कला जीवन को सत्यम् शिवम् सुंदरम् से समन्वित करती है। कला उस क्षितिज की भांति हैं जिसका छोर अत्यन्त विशाल है। जिसमें अनेक विधाये सम्मिलित है। कला के द्वारा ही व्यक्ति के बुद्धि, अंतरात्मा व्यवहार, रूचि, सत्यता का स्वरूप विभिन्न पहलुओं जैसे संगीत, साहित्य, नृत्य, रंगोली, वास्तुकला, पाकशाला, चित्रकला, मूर्त्तिकला, इत्यादि में परिणित होता है।

साहित्य संगीत कला विहीनः।
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।।

अतः कलाओं में श्रेष्ठ कला है चित्रकला। मानव स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है। जिसमें मानव अपने अभिव्यक्ति, सोच, तथ्य, घटना को चित्रों द्वारा व्यक्त करता है। कला तो मानव जीवन में अतुल्य अनुठा भूमिका प्रदर्शित करता है। जब बात शिक्षा में कला की भूमिका की हो तो यह एक अद्भुत, आनंदायक स्पष्ट अवधारणात्मक प्रस्तुति है जो शिक्षा के सरल रूचिपूर्ण स्पष्ट – कल्पनाशील सृजनशील रूप में रूपांतरित करती है।

आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में कला समन्वय से कला के विभिन्न रूप प्रदर्शित होते है। कक्षाओं में अध्ययन – अध्यापन के दौरान शिक्षा – रंगमय नाट्कमय, रोचकमय एक कलामय हो जाता है।

जहाँ बालकों के व्यक्तिगत विभिन्नता अनुरूप उनके व्यक्तितत्व का विकास एवं पाठ्यक्रम के चयन के साथ – साथ भविष्य को एक नई दिशा मिलती है। कला के द्वारा ही मानव के मन में संवेदनाएँ उभारने, नई – प्रवृतियों को ढालने तथा चिन्तन को रूपान्तरित करने, अभिरूचि को नव दिशा एवं विषयों के अनुरूप शिक्षा में नवनिर्मित किया जाता है।

अतः शिक्षा में कला का उद्देश्य कलाकार का निर्माण नहीं बल्कि कलाबोध और कलात्मक व्यवहार को विकसित करना है। इनके लिए अलग से विशेषकर कला विषय की प्राथमिकता एवं उससे सम्बंधित व्यवसाय, वृत्तिक चयन ही नहीं वरन् हर विषय के शिक्षण – अधिगम में कला का समावेश होना चाहिए। कक्षा की साज – सज्जा एवं दैनिक व वार्षिक गतिविधियों में कलात्मकता का भाव विद्यमान होनी चाहिए।

शिवांगी कश्यप
डी०एल०एड०
2019–21

मेरा महाविद्यालय

प्रकृति की सुखमय गोद में,
अवस्थित है मेरा महाविद्यालय ।
पठन–पाठन और संस्कार में,
अग्रसर है मेरा महाविद्यालय ।

संत पॉल टिचर ट्रेनिंग कॉलेज इसका नाम है,
बहुआयामी शिक्षा देना ही इसका कार्य है,
विशिष्ट प्रशिक्षित शिक्षकों का यहाँ योगदान है,
नई विधि और सहज बोध इनका परम कर्तव्य है।

माता पिता से प्यारे गुरुवर
सहज–सरल अधिगम करवाते है।
समय–समय पर भूल हमारी
सद्‌वानी से दूर भगाते है।

हम सब बालक मेल–जोल से,
नित–दिन पढ़ने आते–जाते
साथ खेलते साथ है खाते ,
गुरु कृपा से अमृत ज्ञान को पाते

महाविद्यालय मेरा श्रेष्ठ है,
जाने सकल जहान है
देना उत्तम शिक्षा–दीक्षा,
इसकी यही पहचान है ।

रूपांजली कुमारी
डी०एल०एड
2019–21

वक्त

मै हकीकत हूँ,
कोई ख्वाब नहीं।

मैं वर्तमान हूँ,
इतिहास नहीं।

आहॅत का आहट हूँ,
काहिल का आवाज नहीं।

जिसने तल्लीन किया है मुझकों,
खेद अलावा कोई मार्ग नहीं।

अहमियत समझा जिसने मेरा,
वो श्रेष्ठ है, संकिर्ण नहीं।

धीर तदर्थम बहूमूल्य हूँ,
मम कश्चित् मोल नहीं।

सत्य कहा है, मै परिन्दा हूँ।
रवाना गर हो गया, पुनरावृत्ति होतीं नहीं।

कुमारी सौम्या
डी०एल०एड
2019–21

"रक्तदान है महादान"

रक्तदान है महादान, नहीं है आम दान
रक्तदान है महादान !

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा
नर को तुम नारायण समझो
नर सेवा का व्रत लो महान
मातृभूमि की सेवा में, अर्पित कर दो तन–मन–धन
मन में लो यह शपथ
कि खून की कमी से, न निकले प्राण
रक्तदान है महादान, नहीं है आम दान

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा
तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा
समय की माँग ने कहा
तुम खून का दान दो, मैं नव जीवन दूँगा
रक्तदान है महादान, नहीं है आम दान

हम सब है युवा शक्ति
निभाएँ अपना कर्तव्य महान
करे हम–सब मिलके रक्तदान
रक्तदान है महादान, नहीं है आम दान

अतः हम युवा शक्ति प्रण ले कि
हम उत्साह पूर्वक रक्तदान करेंगे
लोगों की जान बचाकर
जीवन में अनमोल कार्य करेंगे।

रेखा सिंह
बी0एड0 2019–21

माँ का त्याग

प्रतिदिन सवेरे सबसे पहले,
न जाने कैसे जग जाती है।
माँ जैसे हो एक जादू,
आँगन सारा महकाती है।
बिना आहट हर कमरे से,
वो आती और जाती है।
कोई सपना टूट ना जाए,
ऐसे वो जगाती है।
सबका मन रख पाने को
कितना जतन उठाती हैं।
अपनी खून से सींचकर,
राह को सरल बनाती हैं।
माँ ही जाने कैसे,
मेरे सपने वो जान जाती है।
कभी मंदिर में मन्नत माँगे,
कही धागे बांध आती है।
सबका ध्यान रख पाने को,
माँ कितना कष्ट उठाती हैं।
माँ अपने बच्चों के खातिर,
सारे गम सह लेती हैं।
सच कहते हैं दुनिया वाले,
सच में माँ घर को स्वर्ग बनाती है।
धरती से अंबर तक,
ख्वाब से हकीकत बनाती है।

मनोरंजन कुमार
डी०एल०एड०
2019–21

सच्ची सफलता

पथ में काँटे न होते तो जीवन का आभास न होता,
मंजिल, मंजिल रह जाती, मानव का इतिहास न होता।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता है और वह उसमें कामयाबी पाना चाहता है। यदि वह अपने कार्य में सफल हो जाता है तो वह प्रसन्न हो जाता है। भाग्य उसका साथ दे रहा है इसलिए वह सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। इसके विपरीत यदि वह अपने कार्य में असफल हो जाता है तो वह निराश हो जाता है। मन ही मन दुखी रहता है तथा हर वक्त भाग्य को कोसता रहता है।

सच्ची सफलता और सच्चे सुख–शांति की प्यास से व्याकुल मनुष्य मृग–मरीचिका के समान भ्रमित होकर अनेक मानसिक रोगों का शिकार हो रहा है। जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना दो अलग–अलग बाते है। जरूरी नहीं जिसने साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया वह सदा संतुष्ट और प्रसन्न है। वास्तव में इच्छित फल प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं क्योंकि सफलता का संबंध हमारे नैतिक मूल्यों से भी है। मनुष्य ने सागर की गहराई में जाकर मोती तो खोज पाया किन्तु अपने मन की गहराई में जाकर सुख–शांति नहीं पा सका। इस बात से यह स्पष्ट है कि सफलता बहुआयामी है जो अपने विविध रंगो और रूपो से सुसज्जित है।

हमें चाहिए कि हम ध्येय निश्चित करें, उसे मानस पटल पर स्पष्ट करके मन में व्याप्त कर लें, फिर सफलता स्वयं खींची चली आएगी। कुछ लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते क्योंकि हमारी तकदीर ही ऐसी है। किन्तु हम यदि यह संकल्प कर ले कि “सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है” और मैं इसे प्राप्त करके रहूँगा। फिर असफलता की चिंता नहीं रहेगी। “असफलता जीवन का सौंदर्य है, संघर्ष जीवन का काव्य है,” कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता उसे बार–बार आघात करना पड़ता है इसलिए लक्ष्य को सामने रख, जरूरत है बस आगे बढ़ते रहने की।

वास्तव में सफलता हमारे प्रयास द्वारा प्राप्त ऐसा फल है जो समाज में सुख–शांति और समृद्धि की वृद्धि करें। ऐसा कर्म जिससे समाज को दिव्य प्रेरणा मिलें एवं खुद का व्यक्तित्व भी नैतिक रूप से गौरवान्वित हो जिससे जीवन में आत्मिक संतुष्टता और प्रसन्नता के स्वर्ण कमल खिलें। यह तभी संभव है जब हम अपने आंतरिक शक्ति को पहचान कर खुद में आत्म निरीक्षण कर पूर आत्म विश्वास, एकाग्रता, साकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीवन में आने वाले चुनौतियों को अपने विवेक तथा साहस से सफलता में परिवर्तित करेंगे। यही जीवन की सच्ची सफलता है। किसी ने सच कहा है :–

दुनिया का हर शौक पाला नहीं जाता,
शीशे के खिलौने को उछाला नहीं जाता,
मेहनत और लगन से हासिल हो जाती है सफलता,
हर बात को किस्मत पर टाला नहीं जाता।

Ram Babu Kumar
B.Ed. 2019-21

स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता

विचार व्यक्तित्व की जननी है, जो आप सोचते हैं बन जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद वेदान्त के व्याख्याता एवं एक आध्यात्मिक गुरू थे, किंतु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उनके चिंतन में दलितों, महिलाओं व गरीबों के उत्थान तथा 'कर्म' की प्रधानता' का विचार विशेष रूप में उपस्थित था।

मानव निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानने वाले स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन परम्परागत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अद्भुत समन्वय है। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

वास्तव में शिक्षा मनुष्य को सभ्य मानव बनाने की प्रक्रिया है या यह कहा जाये कि मनुष्य को मानव बनाने का दायित्व शिक्षा पर है शिक्षा की व्यवस्थागत प्रक्रिया से निकलकर ही बालक एक वयस्क के रूप में समाज में अपना स्थान और स्तर निर्धारित करता है। व्यक्तित्व और समाज की आवश्यकता के अनुसार बालक को शिक्षित और सभ्य बनाने का अहम कार्य शिक्षा व्यवस्था से ही अपेक्षित होता है।

स्त्री शिक्षा संबंधित अपने विचारों को व्यक्त करते हुए स्वामी विवेकानंद कहते है – ''दुनिया के कल्याण के लिए कोई अवसर नहीं है जब तक कि महिला की स्थिति में सुधार न हो पक्षी के लिये केवल एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है।'' उन्होंने इनके उत्थान के लिए शिक्षा को सबसे महत्त्वपूर्ण साधन माना। उनका मत था कि जिस राष्ट्र में महिलाओं का सम्मान नहीं होता, वह राष्ट्र और समाज कभी महान नहीं बन सकता।

शिकागो की धर्म सभा में स्वामी जी ने सनातन धर्म और भारतीय महान ग्रंथ गीता को प्रस्तुत करते हुए अपने संबोधन में जेंटलमैन शब्द के जगह भाईयों एवं बहनों शब्द का प्रयोग किया जो हम भारतीय की एक भाषा पहचान को निरूपित करता है। ''वसुधैव कुटुंबकम'' का संदेश देते हुए वे सारे विश्व को एक परिवार मानने की शिक्षा देते हैं।

स्वामी विवेकानंद के विचारों की अभिव्यक्ति से ज्ञात होता है कि मानवीय उदारों की अभिव्यक्ति, जो सभी दुनिया को भाईचारे के एक सूत्र में पिरोया। वास्तव में हमारी शिक्षा का मूल उद्देश्य समस्त मानव समाजों के मध्य मानवता, एकता, बंधुत्व के साथ – साथ नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा तार्किकता का समावेश होना चाहिए।

धन्यवाद

अमृता कुमारी
बी.एड. 2020–22

" नन्ही की पुकार " कन्या भ्रूणहत्या एक जघन्य सामाजिक अपराध

मैं बोझ नहीं हूँ माँ मुझको, यूँ कोख में न मारो,
तुम्ही तो मेरी ताकत हो, ऐसे हिम्मत न हारो।
आने दो मुझे इस दुनिया में तुम्हारा नाम रौशन कर दूँगी,
तेरी हर तकलीफ दूर कर, तेरा घर खुशियों से भर दूँगी।
मैं भी तो तेरा खून ही हूँ इस बात को विचारो,
मैं बोझ नहीं हूँ माँ मुझको यूँ कोख में न मारो।
मुझ पर विश्वास भले न हो खुद पर तो विश्वास करो,
मुझे बचाने की खातिर थोड़ा तो प्रयास करो।
रूखी–सूखी खाकर मैं, संग तेरे रह जाउँगी,
बेटी होने के फर्ज सारे गर्व से पूरे निभाउँगी।
इन लोगों के स्वार्थ की खातिर मेरी दुनिया न उजाड़ो।
मैं बोझ नही हूँ माँ मुझको, यूँ कोख में न मारो।
न होगी जो बेटी तो बेटों को किस संग ब्याहेंगे ?
बहन न होगी तो भाई राखी किस से बँधवाएँगे?
नवरात्री के दिनों में कन्याएँ भी न मिल पाएँगी,
आने वाली दुनिया कैसे अपना अस्तित्व बचाएगी?
बतलाओ ये बातें सबको, सोंच को इनकी सुधारो,
मैं बोझ नहीं हूँ माँ मुझको यूँ कोख में न मारो।
यही है देवी, माता भी यही है,
जो प्यार से सबको बाँधे वो नाता भी यही है।
बिन नारी न सृष्टि चलेगी इस बात का भान करो,
बोझ समझकर बेटी को, न बेटी का अपमान करो।
है सबका जीवन सुधारती, इसका भी सम्मान करो,
मैं बोझ नहीं हूँ माँ मुझको, यूँ कोख में न मारो।

रश्मि कुमारी
बी० एड० 2019–21

रोगमुक्त जीवन की कुजी है योग

**"योग द्वारा सजाओं, जीवन में नये रंग।
इसे अपनाकर पाओ नया उमंग।।"**

योग जिसे हम वर्तमान समय में योगा के नाम से जानते है, हमारे भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं। यह हमारे प्राचीन ऋषि महर्षियों द्वारा निर्मित पूर्णतः वैज्ञानिक क्रिया है, जो हमारे शरीर के साथ – साथ हमारे मन एवं आत्मा को पूर्णतः ताजगी एवं प्रफुल्लता प्रदान करता है। योग हमारे शरीर एवं आत्मा के मध्य एव प्रार्थनापूर्ण अनुशासन बनाता है हमारी भारतीय सनातन संस्कृति में सदियों से योग कों सेहतमंद जीवन के लिए आधार माना जाता है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में ये आधार कही न कही विलुप्त हो गया। परंतु आज 21वी सदी के इस वर्तमान दौड़ में यदि हम अपनी दिनचर्या और स्वास्थय पर गौर से ध्यान दे तो पता चलता है कि हमे ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के हर व्यक्ति को अपने आप को पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए किसी न किसी रूप में योग का सहारा लेना ही पड़ेगा। क्योकि वर्तमान समय में हम यह देख रहे है कि कोई भी दवाई हमारी बीमारी का पूर्ण ईलाज करने में सक्षम नहीं है, चिकित्सा शास्त्र की भी अपनी कुछ सीमाएँ है और अपना कुछ खराब असर है जो हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह है इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो योग ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो हमारे तन, मन का मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रखने में संभव हैं।

अपराजिता कुमारी
डी०एल०एड० 2019–21

संत पॉल शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्याल

संत पॉल है ऐसा संस्थान ।
बना रहा बच्चों को अच्छा इंसान।।

अविनाश सर ने किया ऐसा काम।
जग में हो रहा उनका नाम।।

रोली मैम के अनुशासन में।
हम सब रहते शासन में।।

श्याम सर के ज्ञान से।
हमारा मन भरता अभिमान से।।

मनोज सर की डांट से।
गलती सँभल जाती अपने आप से।

अमरेंद्र सर के दोस्ताना मिजाज से।
हम सब बोलते हैं खुली दिमाग से।।

मुकेश सर से मिलती अभिप्रेरणा।
जिससे हम बनाते आगे बढ़ने की योजना।।

संतोष सर के सरल स्वभाव से।
सब मुंत्रमुग्ध हो जाते उनके विचार से।।

सुरेन्द्र सर के भाषा का ज्ञान।
बनने लग जाते संगीत समान।।

सुनके संजीव सर का संगीत।
याद आने लगता है जीवन का हर रीत।।

देख नरेंद्र सर का चित्र।
हो जाते मन के भाव विचित्र।।

घोष सर का योग है ऐसा।
बन जाते सब योगी जैसा।।

अर्पणा मैम ने किया ज्ञान का ऐसा शोध।
हमारे मन में जगा हैं अज्ञानता के प्रति प्रतिशोध।।

देख रिचा मैम का आत्मविश्वास।
खुद में जगाते हैं हम विश्वास।।

निजामुद्दीन सर लिखवाते हैं ऐसा।
खुद को हम समझने लगते है कवि के जैसा।।

तहसीन सर के अधिगम की प्रक्रिया में।
सँवर रहे हम सब उनकी बगिया में।

दरवाजे पर दो गार्ड है ऐसे।
लगते सीमा पर दो जवान के जैसे।।

संत पॉल परिवार है ऐसा।
हम सबको लगता अपने घर संसार के जैसा।।

कुमारी नीलमणी
बी० एड० 2019-21

पंचायती राज व्यवस्था

पचायती राज, एक दर्शन और विचारधारा है। यह केवल शासन, स्वशासन तक सीमित विचार नहीं है बल्कि व्यापक अर्थो में प्रत्यक्ष लोकतंत्र व गाँधी के सर्वोदय शासन का पर्याय है। यह शासन सत्ता को लोगों तक पहूँचाने का साधन बनकर सहभागी लोकतंत्र का पर्याय है।

भारत में प्राचीन काल से ही पंचायती राज व्यवस्था अस्तित्व में रही है। महाभारत और रामायण काल में भी पंचायत किसी क्षेत्र में चुने पाँच प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक निकाय होती थी। समाज के ऐसे पाँच गुण वाले व्यक्ति जो सोच–समझकर काम करने वाले हो दूसरों की रक्षा के लिए हमेशा आगे आने वाले, किसी काम को व्यवस्थित ढ़ंग से करने वाले, शारीरिक श्रमी व घर गृहस्थी छोड़कर गाँव से बाहर सन्यासी की तरह जीवन जीने वाले व्यक्ति ऐसे पाँच अलग–अलग गुणों वाले व्यक्ति को समाज में आदर के भाव से बुजुर्ग मानते हुए समुदायपरक समाधान निकालने हेतु मान्य समझा जाता था। ये परंपरा मुगलों के शासन काल तक अनवरत चलती रही परन्तु अंग्रेज के आते ही इसमें रूकावट आने लगी क्योंकि उन्हें स्वायत इकाई का स्वरूप बिल्कुल पसन्द नहीं था। इसलिए इन्होंने इसके साथ छेड़–छाड़ किया।

1947 ई० में आजादी मिलने के साथ ही स्थानीय स्वशासन को सशक्त बनाने, गाँव के लोगों का उसमें भागीदारी बढ़ाने, योजनाओं में गति लाने, स्थानीय स्तर पर छोटे–छोटे विवादों को आपस में सुलझाने के उद्देश्य से बिहार पंचायती राज अधिनियम 1947 का गठन हुआ । 1948 में इसे पूरे राज्य में लागु किया गया। इस अधिनियम के अन्तर्गत ग्राम पंचायत का कार्यकाल 3 वर्ष, उम्मीदवार का आयु सीमा 25 वर्ष, मतदाता का आयु सीमा 21 वर्ष निर्धारित किया गया। बाद में ग्राम पंचायत का कार्यकाल 5 वर्ष और उम्मीदवार की उम्र सीमा 21 वर्ष और मतदाताओं की उम्र सीमा 18 वर्ष निर्धारित की गयी ।

चाँदनी कुमारी
डी०एल०एड०
2020–22

श्रीमद भगवद गीता का शिक्षा दर्शन

गीता यानी श्लोकों का एक ऐसा अद्भुत संयोजन जिसके प्रथम श्लोक की प्रथम पंक्ति –धर्म क्षेत्रे, कुरुक्षेत्र समवेता युयुत्सवः से लेकर अंतिम श्लोक की अंतिम पंक्ति 'तंत्र श्री विजयो भूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।' किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आदर्श प्रतिरूप बनाने, किसी भी राष्ट्र को विश्वगुरू बनाने तथा विश्व का निर्माण करने वाले विश्वकर्मा के पद पर सुशोभित करने एवं सम्पूर्ण पृथ्वी पर निवास करने वाले मनुष्यों को मनुष्यता की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का सामर्थ्य समाहित है।

शिक्षा दर्शन की बात करे तो शिक्षा में शिक्षक, शिष्य और शिक्षण के प्रयोजन का निर्धारण और शिक्षा के माध्यम से विद्या की प्राप्ति का मार्ग सुनिश्चित करने का नाम ' शिक्षा दर्शन' है।

वर्तमान परिवेश में मनुष्य न बनाकर, कल –पुर्जे बनाने वाले शिक्षण पद्धतियों का दोष है। ऐसे में व्यवहारिकता पर आधारित गीता की शिक्षा–दर्शन की बात करना उसकी उपलब्धि, उपयोगिता, उपादेयता, सर्वलौकिकता और सार्वभौमिकता सिद्ध करना अति आवश्यक है।

शिक्षा के मुख्यतः दो उद्देश्य होते हैः– पहला उद्देश्य – तात्कालिक उद्देश्य यानी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति एवं दूसरा मूल उद्देश्य आत्मनुभूति अर्थात मोक्ष की प्राप्ति।

गीता में मूल आधारित शिक्षा की बात कही गई है। गीता में जन–जीवन मूल्यों का वर्णन किया है, उन्हें पाठ्यक्रम में समाहित करके शिक्षा के उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। गीता–शिक्षा दर्शन के अनुसार हमारे जीवन मुल्यों में अभय, अहिंसा, आदरभाव, आत्म विश्वास, आत्मानुशासन, इमानदारी, उत्तरदायित्व, करूणा, कल्पनाशीलता, कर्मठता, कर्तव्यपरायणता, गुरू भक्ति, गतिशीलता, त्याग, दया, देशप्रेम, ध्येय, निष्प्रदाता, नम्रता, प्रेम, परोपकार, पवित्रता, मातृत्व, विश्व–बंधुत्व, स्वच्छता, संयम, स्वतंत्रता, संतोष, सदाचार, समानता, सहिष्णुता, शिष्टाचार, क्षमा एवं ज्ञान का होना अति आवश्यक है।

गीता का शिक्षा – दर्शन (**Hand, Heart, Head**) मन आत्मा और शरीर के विकास को प्रोत्साहित करती है, जो आज के समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

'सा विद्या या विमुक्तये' जो शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है इसकी प्राप्ति में गीता का शिक्षा दर्शन शिखर की भूमिका निभा सकती है।

कुमारी वर्षा
बी०एड० 2019–21

दहेजप्रथा

बंद करा दहेजप्रथा,
नारी का न करो व्यापार,
स्वयं जिसे कहते तुम लक्ष्मी,
क्यों कर रहे फिर उस पर अत्याचार।

दौलत के तराजू पर तौल के
छीना तुमने उसका अधिकार,
नारी बिन जीवन है सुना
थोड़ा तो करो विचार।

कभी संगनी, कभी भगिनी बन,
उसने लुटाया तुम पर प्यार,
दौलत के नशे में डूबे ऐ! मानव,
लूट लिया उसकी खुशियों का संसार।

अब भी समय शेष है देखो,
करो स्वयं में जागरूकता का संचार,
कुरीतियों से ग्रसित समाज का
तुम करो अब बहिष्कार।

त्यागोकुंठित सोच को, अपनी ऐ मानव
करो परिवर्तित अपना व्यवहार,
हो सके जिससे समाज में
स्वस्थ मानसिकता का निर्माण।

बंद करो दहेजप्रथा
नारी का न करो व्यापार
स्वयं जिसे कहते तुम लक्ष्मी
क्यों कर रहे फिर उस पर अत्याचार।

मधु कुमारी
बी० एड० 2020–22

छात्र राष्ट्र का भविष्य निर्माता

छात्र शक्ति का वंदन करने आयी हूँ,
नई उमंगों को नभ में उड़ाने आयी हूँ।

राष्ट्र एकत्व का आगाज कराने आयी हूँ,
हे राष्ट्र पुत्रों तुम्हें जगाने आयी हूँ।

स्थित हो आसमान में सूर्य सदृश्य प्रकाशित करो,
देश को नई ऊर्जा से उन्नति रूप प्रज्ज्वलित करो।

फूलो सी खुशबू फैलाकर श्रम का शुभारंभ करो,
निज गौरव की धरती पर अमृत का रसपान करो।

छात्र तुम हो वो शक्ति जो खंडित न हो,
नहीं हो खंडित अखंड राष्ट्र की एकता।

नहीं असंभव तुम्हारे लिए कुछ भी,
सब कुछ संभव करके दिखलाओ।

तुम हो छात्र राष्ट्र के भविष्य निर्माता,
भविष्य स्वर्णिम करके दिखलाओ।

हेमा रानी
डी०एल०एड०
2019–21

क्षमा की अनुभूति

मानव अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की भावनाओं एवं आत्मिक चेतना से घिरा रहता है, जिसमें क्रोध, लोभ, इर्ष्या, प्रेम, संदेह, विश्वास, प्रतिस्पर्धा, क्षमा आदि का भाव व्याप्त रहता है। मानव अपने जीवन काल में नित्य– निरंतर अपने लाभ इच्छा, प्रेम की प्राप्ति हेतू भांति – भांति के कार्य को निष्पादन करता है। विभिन्न प्रकार के कार्य में संलग्नता, इच्छाओं की संम्प्राप्ति एवं संघर्षमय जीवन की व्यस्तता के दौरान नैतिक और अनैतिक कार्यो का भी समावेश करता है। मानव के नैतिक और अनैतिक प्रेम – द्वेष, दान – लाभ, संदेह और विश्वास के घमासान द्वन्द्व में गलती भी स्वाभाविक रूप में होती है।

अतः मानव जीवन का आत्मिक अनुभूति है ''क्षमा'' जिसे कहना या लिखना या शब्दों में व्यक्त करना है। लेकिन उससे भी कठिन है क्षमा की अनुभूति होना।

''खामेमि सत्वे जीवा
सत्व जीवा संमतु में।''

धन प्रेम लेना सरल है और देना भी उतना ही सरल है, लेकिन क्षमा लेना या देना बहुत कठिन है। इसी लिए क्षमा को सहनशीलता तथा अहंकार के त्याग का सूचक माना गया है।

क्षमा लेना और देना कायरों का नहीं, वीरों का मार्ग है। क्षमा तो वही मनुष्य कर सकता है, जिसकी आत्म–शक्ति की रोशनी जगमगा उठी हो, जिनके जीवन में वास्तविकता का बीज पनप रहा हो जो अपने वचन एवं कर्म में समानता रखता हो वही व्यक्ति क्षमा के द्वारा संसार में समाज में खुशियां बिखेरता है। बैर – भाव भुलाकर टुटे दिलो को जोड़ता है। अतः हम सभी को अपने गलती का अनुभूति सिर्फ वचन से नही बल्कि कर्मो में होनी चाहिए और हमे क्षमा शब्दो में नहीं बल्कि अन्तर्मन रूप से करनी चाहिए।

सुमन कुमार
डी०एल०एड
2019–21

भारतीय समाज में शिक्षको की भूमिका

''ईश्वर सत्य है, सत्य शिव है एवम् शिव ही सुंदर है''।

सत्यम, शिवम् सुन्दरम के तीन स्तम्भ ही इस सम्पूर्ण जगत के आधार है एवम् इसे पूर्णता प्रदान करता है।

''गुरू'' चौथे स्तंभ के रूप में ज्ञान रूपी प्रकाश ही माया के अंधेरा पथ को रौशन करता है एवम् बिन गुरू ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य प्रचलित है। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' इसका अर्थ है अंधेरे से उजाले की ओर जाना। इस प्रक्रिया को वास्तविक अर्थो में पूरा करने के लिए शिक्षा शिक्षक और समाज तीनो की बड़ी भूमिका होती है। भारतीय समाज शिक्षा और सांस्कृति के मामले में प्राचीनकाल से ही बहुत समृद्ध रहा है। भारतीय समाज में जहाँ शिक्षा को शरीर मन और आत्मा के विकास का साधन माना गया है, वही शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। माँ हमें जन्म देती है और शिक्षक हमें जीवन देते है। शिक्षक समाज में समानता लाते है। समाज की कुप्रथाओं को दुर करने में भी शिक्षक ही मुख्य भूमिका निभाते है जब तक हमें सही शिक्षा नही मिलेगी तब तक हम सही गलत की पहचान नही कर पाएँगे। शिक्षक पर शिष्य का विश्वास होता है। जिस तरह एक अगरबत्ती में सुगन्ध होता है फिर भी वह जब तक नही जलती है उनकी सुगन्ध नही फैलती है। ठीक उसी प्रकार शिष्य की प्रतिभा है। प्रत्येक छात्र में अंर्तनिहित ज्ञान विघमान होता है। जिसे शिक्षक कला, संगीत, नृत्य, लेखन, वक्ता एवं विविध रूपो में विकसित करते है। शिक्षक एक माध्यम है जो बालको के आंतरिक योग्यता के अनुरूप जीवन के लक्ष्य प्राप्ति में पथ – प्रदर्शक के रूप में वृत्तिक निर्देशक रूप में सहायक सिद्ध होते हैं भारतीय समाज के प्रत्येक घर तक शिक्षा को पहुँचाने के भागीरथी सरकारी प्रयासों के साथ – साथ शिक्षको की मन की स्थिति का विश्लेषण भी उतना ही अनिवार्य होना चाहिए। शिक्षको को भी वह सम्मान मिलना चाहिए, जिनके वे अधिकारी है। शिक्षक, शिक्षा और विधार्थी के बीच एक सेतु का कार्य करता है और यदि यह सेतु ही निर्बल होगा तो समाज को खोखला होने में देरी नही लगेगी। एक समर्पित और निष्ठावान शिक्षक ही देश की शिक्षा–प्रणाली के सुदर व सुदृढ़ बना सकते है।

''शिक्षक के बगैर आप सभ्य और समृद्धसमाज की कल्पना नही कर सकते''

शिक्षक मूर्तिकार के समान होते है जिनके कठोर शब्द हथौड़े की चोट के समान हो सकते है,

पर उनका मकसद आपका ही व्यक्तित्व निखारना होता है।

साक्षी कुमारी
बी०एड० 2020–22

शिक्षा का आधार - संगीत

संगीत जिसे हम सुव्यवस्थिति ध्वनि के साथ – साथ रसास्वादन की सृष्टि के रूप में देख सकते है। संगीत एक ऐसा माध्यम है, जिससे शिक्षा प्रदान करने वाले के साथ – साथ ग्रहण करने वाला भी बड़े हर्षोल्लास होकर इसकी शिक्षा को रंगमय, कलामय, संगीतमय के साथ – साथ रूचिमय बना सकता है । पौराणिक ग्रंथो में संगीत के बारे में कई ऐसे व्याख्यान दिए गए है, जो संगीत को हमारे जीवन में समाहित करने के लिए प्रेरित करते है।

आज कल के दौर में अगर संगीत को शिक्षा में सम्मिलित किया जाए जो कि हमारे नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार अतः विषय के रूप में शामिल करने की बात कही गई है, तो इससे आने वाले भविष्य में संगीत के कई ऐसे दिग्गज संगीतकार, गीतकार, गायक के साथ – साथ अन्य भी विकसित हो सकते है।

अगर हम बात प्रारंभिक कक्षाओं की करे, तो वहाँ बच्चों को पढ़ाई समझ में उतनी नही आती जितना की हम उनसे अपेक्षा करते है, लेकिन अगर हम संगीत के उपयोग से उस विषय – वस्तु को बच्चों के सामने प्रस्तुत करें तो इससे बालको को संगीतबद्ध शिक्षा ग्रहण करने में काफी सहायता मिलती है। इससे साथ – साथ वह लयबद्ध भी पढ़ना सीख सकते है।

''संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर सुर में बसे है रामा।
रागी तो गाये रागिनी, रोगी को मिले आराम।''

अभिषेक कुमार
डी०एल०एड० 2019–21

नारी शिक्षित समाज शिक्षित

'स्त्री ना होती जग म्हं, सृष्टि को रचावै कौण।
ब्रह्मा विष्णु शिवजी तीनों, मन म्हं, सृष्टि को रचावै कौण।
एक ब्रह्मा नैं शतरूपा रच दी, जबसे लगी सृष्टि हौण।'

यदि नारी नहीं होती तो सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक सृष्टि की रचना करने में असमर्थ बैठे थे। जब ब्रह्मा जी ने नारी की रचना की, तभी से सृष्टि की शुरूआत हुई।

जब कोई पुरूष सफल होता है, तो उसकी सफलता का आधार एक नारी ही होती है। जब शिशु इस संसार में आता है, तो उसे प्रथम गुरू के रूप में '' मिलती है। इसलिए नारी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है, वह पूरे समाज को शिक्षित कर परिवर्तन ला सकती है। शिक्षित माँ बच्चे को अच्छें संस्कार देती है। अच्छे संस्कारों से समाज की समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

नारी परिवार का केन्द्र बिन्दु होती है। एक परिवार में जब कोई नारी शिक्षित हो जाती है, तो उस परिवार के सदस्यों का, आने वाली पीढ़ी का, सबका जीवन हमेशा के लिए बदल जाता है। माँ को ईश्वर से भी उपर माना गया है, वह घर को मंदिर बना सकती है।

इसलिए एक नारी के जीवन में शिक्षा का दीप जलना चाहिए। नारी के हाथों को ताकत देने के लिए उन्हे शिक्षा रूपी तलवार की जरूरत है। शिक्षित नारी ज्ञान का भंडार होती है, वह अपनी क्षमता से समाज के हर क्षेत्र के विकास में अतुल्य योगदान दे सकती है।

अतः नारियों को शिक्षित करने से ही परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण है। विश्व के विकास में स्त्रियों की भागीदारी यही आज की मांग है, जो उचित है। भेदभाव जुल्म मिटायेगे, दुनिया नई बसायेंगे, नई है डगर, नया हैं सफर, अब हम नारी को भी पढ़ाएंगे। ''जरूरी नही रौशनी चिरागों से ही हो, शिक्षा से भी घर रौशन होते है''

विश्वनाथ साह
बी० एड०
2019–21

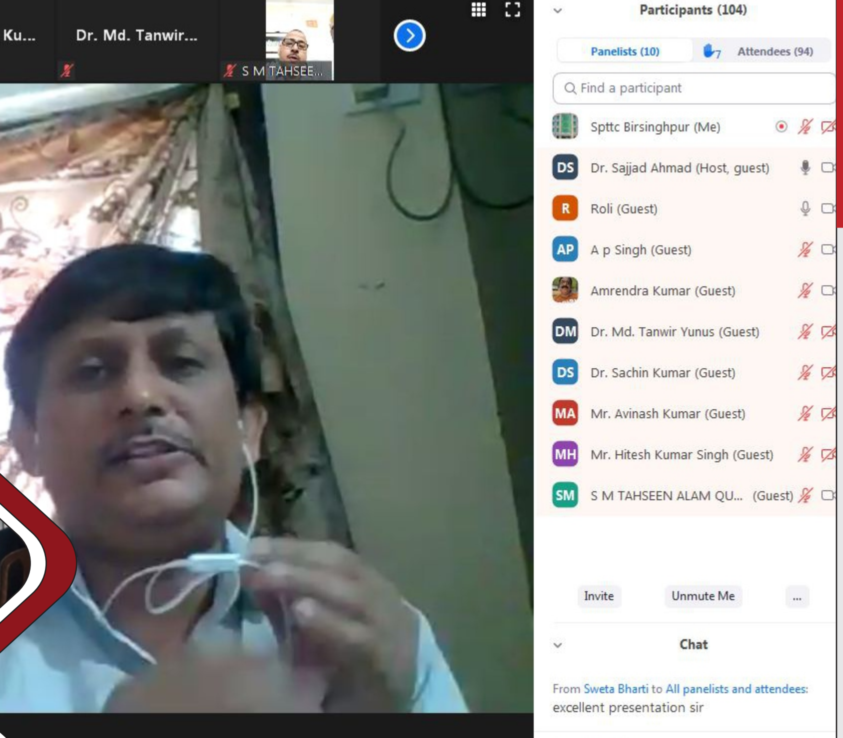

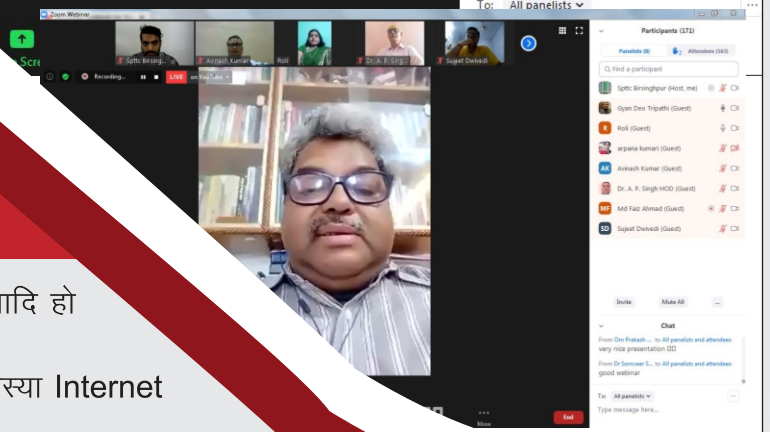

इन्टरनेट का जाल

अपनी सुविधा के अनुसार उपयोग करते–करते कब हम इसके आदि हो जाते है और लत लग जाती है पता ही नहीं चलता।

जी हॉं मैं बात कर रहा हूँ आज दुनिया भर में व्याप्त समस्या Internet addiction की ।

आज हम इन्टरनेट के जाल में पूरी तरह फँस के रह गए है, जिसके कारण हम खुद की देखभाल, खाने–पीने, शरीर की साफ–सफाई तक का ख्याल नही कर पाते है। जिसके कारण परिवार के लोगों के साथ मतभेद या टकराव आम बात हो गई है। आज के युवा अपना कीमती वक्त ज्यादा – से ज्यादा Internet, Social Media platform पर बीताते है, जिससे वे उस काल्पनिक दुनिया में खोकर 'उच्च उम्मीद', 'जिद्दीपन' का शिकार होने लगते है।

ज्यादा वक्त Phone तथा Internet में गुजारने के कारण उनके स्वास्थ पर भी गहरा असर पड़ता है, जैसे ऑंख की क्षमता कम हो जाना, सही समय पर नींद न आना, हमेशा तनाव महसुस करना आदि। अगर थोड़ी देर के लिए भी उनके Phone तथा Internet से दूर करके देखे तो 'नोमोफोबिया' के लक्षण दिखने लगते है। कमजोर पाचन शक्ति आम बात हो गई है।

इस तरह आज के युवा ज्यादा प्रभावित हो रहे है। वे हमेशा Whatsapp, facebook, Instagram, Video Game जैसे कई Apps में उलझ जाते है। इतने आदि हो जाते है, कि Bathroom में भी फोन को साथ ले जाते है।

इस खतरनाक लत को खत्म करने के लिए हम अपने परिवार से शुरूआत कर सकते हैं अगर परिवार के किसी भी व्यक्ति में ऐसे लक्षण दिखे तो सबसे पहले उनके साथ बात करे उन्हे समझाएँ,उनकी देखभाल करे ताकि धीरे–धीरे समय के साथ उनमें सुधार हो सके और उन्हे अवसाद से बचाया जा सके।

सौरभ कुमार
डी०एल०एड०
2020–22

डिजिटल पेरेंटिंग (परवरिश)

पेरेंटिंग एक बहुत बड़ा उतरदायित्व है। भारत में खासकर बच्चो के जन्म लेते ही उनके जीवन के हर पहलू का ध्यान उसके माता–पिता को रखना पड़ता है माता–पिता इसे अपने प्यार से परिपूर्ण कर्तव्य मानते है, साथ ही साथ अपने बच्चो के उज्जवल भविष्य हेतु हर संभव प्रयास करते है। अपने बच्चो के सही मार्गदर्शन करने के लिए उनके जीवन में आने वाली हर स्थिति के बारे में सोचते है। और उन्हें लगता है की अपने बच्चो के मार्गदर्शन हेतु हमेशा सही ही करते है, फिर भी ज्यादातर माता–पिता का यह सोचना कभी–कभी गलत भी हो सकता है।

आज का समय डिजिटल युग या सुचना युग का है। आज के बच्चे ऐसी दुनिया में रहते है जो उस समय से बिल्कुल अलग है जब उनके माता–पिता पले – बढ़े थे।

बच्चे डिजिटल नेटिव है और माता–पिता डिजिटल माइग्रेंट्स है जो इन्टरनेट युग से पहले पैदा हुए है। उन्हें अपने बच्चो का कप्यूटर एवं मोबाईल स्क्रीन पर ज्यादातर समय व्यतीत करना विचलित कर रहा है।

वर्तमान डिजिटल युग में जहाँ सिमित परिवार डिजिटल गैजेट्स से अधिक जुड़े हुए है, जहाँ यह आवश्यकता है कि माता–पिता अपने बच्चो के साथ उपलब्ध डिजिटल संसाधनों के उचित और जिम्मेदार उपयोग के बारे में जानते हो।

डिजिटल पेरेंटिंग मूल रूप से माता–पिता द्वारा बच्चो को डिजिटल गैजेट्स का उपयोग और ऑनलाइन गतिविधि की निगरानी को संदर्भित करती है।

डिजिटल पेरेंटिंग की आवश्यकता :–

1. वर्तमान परिदृश्य में डिजिटल जेनरेशन गैप की दुरी को मिटाना
2. बच्चो के जीवन में डिजिटल मिडिया के कारण उत्पन्न चुनौतियाँ जोखिम और अवसरों को दूर करने के लिए सक्षम बनाना।
3. बच्चो के ऑनलाइन व्यवहार को देखरेख और साथ ही उन्हे आवश्यक ऑनलाइन स्वतंत्रता देने में संतुलन हासिल करना।

डिजिटल पेरेंट (माता–पिता) बनने के तरीके

1. एक अच्छे डिजिटल रोल मॉडल बने ।
2. खुला संवाद करे।
3. ट्रेक रखे और जानकारी बनाए रखे ।
4. पुरानी सीख को छोड़ने और नयी सीख हासिल करने के लिए तैयार रहे।
5. पेरेंट्स नियंत्रण पालन करे।

पल्लवी कुमारी
डी०एल०एड०
2019–21

शिक्षा और भाषा

शिक्षा में भाषा का योगदान अति आवश्यक है। शिक्षा में भाषा एक–दूसरे के पूरक होते हैं। शिक्षा भाषा के बिना अधूरा है जैसे कि विभिन्न प्रकार के ज्ञान – विज्ञान के संकलन। संचार और प्रसार के लिए भाषा अपरिहार्य हो चुकी है। भाषा के द्वारा ही समाज, सभ्यता और संस्कृति का समय अनुरूप रूपांतरण करते है। इसलिए यह अतिशयोक्ति नहीं है कि भाषा का वैभव ही असली वैभव और आभूषण है। – वाग्भूषणम् भूषणम्।

प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रणाली के तहत सुशिक्षित बनाने हेतु प्रयासरत रहते हैं। इसीलिए भाषा का शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है या हम कह सकते हैं कि दोनों एक – दूसरे के पूरक हैं। बच्चे भाषा के माध्यम से ही हर प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। हमारे भारत देश में प्रायः देखने को मिलता है एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करते ही भाषा में परिवर्तन आ जाता है और यही भाषा ही हमें एक – दूसरे के साथ कार्य करने हेतु सहयोग करती है आजकल हम देख रहे हैं कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्रणाली के तहत बच्चों को जरूरत पड़ने पर अपनी संबंधित शिक्षा ग्रहण करने, नौकरी या व्यवसाय करने के लिए एक शहर से दूसरे शहर भी जाना पड़ता है तब बचपन से लेकर आजीविका चलाने तक आपने जो भी शिक्षा या ज्ञान भाषा के माध्यम से प्राप्त किया है, उसी का प्रभाव मिलने–जुलने वाले लोगों पर पड़ता है और जिसका प्रतिफल काम पूर्ण होने के रूप में प्राप्त होकर सफल होता है।

अतः उपर्युक्त आशय से यह निष्कर्ष निकलता है कि भाषा के द्वारा शिक्षा जगत में विचारों की अभिव्यक्ति, तार्किकता का नवपथ, अन्वेषण का सृजन एवं विविध परिपेक्ष्य का समावेश करते हुए शिक्षा के प्रभावोत्पादकता में नैतिकता, आध्यात्मिकता, तार्किकता के रूप में हमारे जीवन में रूपांतरित होता है।

सरोजनी कुमारी
डी०एल०एड०
2019–21

SAROJANI KUMARI